त्रिलोचन

जन्म : 20 अगस्त, 1917 ।

जन्म-स्थान : चिरानीपट्टी, सुल्तानपुर, उत्तर प्रदेश ।

मूल नाम : वासुदेव सिंह।

शिक्षा : गाँव, दोस्तपुर और वाराणसी में प्रारंभिक शिक्षा, हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से साहित्य रत्न, बी॰ एच॰ यू॰ से एम॰ ए॰ (अंग्रेजी, पूर्वार्ध)।

सम्मान : उत्तर प्रदेश हिंदी समिति पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार।

कृतियाँ : काव्य- धरती, गुलाब और बुलबुल, दिगंत, ताप के ताए हुए दिन, शब्द, उस जनपद का कवि हूँ, अरधान, तुम्हें सौंपता हूँ, अनकहनी भी कुछ कहनी है, फूल नाम है एक, सबका अपना आकाश, चैती, अमोला, मेरा घर आदि।

गद्य रचनाएँ- देशकाल (कहानी संग्रह), रोजनामचा (डायरी), काव्य और अर्थबोध (आलोचना), मुक्तिबोध की कविताएँ (संपादन)।

त्रिलोचन प्रगतिवाद या प्रगतिशील काव्यधारा के एक प्रमुख कवि हैं। उन्होंने कविता लिखना स्वाधीनता आंदोलन के अंतिम वर्षों में ही आरंभ किया । उनका पहला कविता संकलन 'धरती' 1945 में प्रकाशित हुआ जिसमें नए ढंग की कविताएँ और गीत थे। फिर लंबे अंतराल के बाद उनकी पुस्तकें प्रकाशित होनी शुरू हुई, यद्यपि पत्र-पत्रिकाओं में उनकी रचनाएँ लगातार आती रहीं। त्रिलोचन के अनेक काव्य शैलियों और रूपों में रचनाएँ की हैं - गीत, गजल, रुबाइयाँ, सॉनेट, छोटी और लंबी कविताएँ, काव्य रूपक और गद्य कविताएँ आदि। हिंदी कविता में सॉनेट के तो वे पर्याय ही माने जाते हैं।- ''सॉनेट और त्रिलोचन की है काठी एक।'' त्रिलोचन ने भारत के व्यापक ग्रामीण जीवन और किसानों-श्रमिकों की संस्कृति एवं जीवन-विवेक को उल्लेखनीय रूप से अपनी कविता का विषय बनाया है। इस दृष्टि से आज के सभी हिंदी कवियों में वे विलक्षण हैं। प्रकृति, मानव जीवन तथा अज्ञान-अशिक्षा, गरीबी, अंधविश्वास में डूबा रहने के बावजूद अपराजेय जिजीविषा और जीवन संघर्षों में जूझते हिंदी भाषी समाज के अद्‌भुत चित्र उनके काव्य में मिलते हैं। जीवन को प्रतिकूल दशाओं में भी उत्तरोत्तर निखारने-सँवारने तथा परंपरागत नैतिकता और मूल्यबोध के सहारे आगे बढ़ते जाने के लिए आवश्यक प्रेरणाएँ उनकी कविता देती है।

त्रिलोजन ने संस्कृत, हिंदी, उर्दू आदि की भारतीय साहित्य परंपरा का बहुत गहराई से अनुशीलन किया है तथा उसे आत्मसात किया है। शब्द-वाक्य के साथ संपूर्ण भाषा, लय, छंद आदि की जैसी सिद्धि त्रिलोचन में दिखाई पड़ती है वह समकालीन कवियों के बीच उन्हें अनुपम बनाती है। अपने बाद की कविता पर त्रिलोचन का रचनात्मक प्रभाव उनके विशेष महत्त्व का प्रमाण है।

यहाँ प्रस्तुत सॉनेट उनके प्रसिद्ध संकलन 'दिगंत' से संकलित है । शीर्षक के अनुरूप इसमें वे उर्दू के महान कवि 'मिर्जा ग़ालिब' को 'अपनों से अपना' कहते हुए हिंदी जनता का जातीय कवि बताते हैं । यहाँ गालिब का अंकन ऐसी सरलता, सादगी और ठेठपन से किया गया है कि उनकी शबीह में नैसर्गिक अपनापे के साथ पूरी परंपरा का अक्स झाँकता है । तत्त्वत: वही और एक ही, अक्षर में अक्षर की महिमा जोड़ने वाला जीवन का साधक कवि है हमारा, क्या हिंदी, क्या उर्दू ।

◆ ◆ ◆

1.
शब्द का परिष्कार
स्वयं दिशा है
वही मेरी आत्मा हो
आधी दूर तक
तब भी
तू बहुत दूर है बहुत आगे
त्रिलोचन !

2.
ओ
शक्ति के साधक अर्थ के साधक
तू धरती को दोनों ओर से
थामे हुए और
आँख मीचे हुए ऐसे ही सूँघ रहा है उसे
जाने कब से ।

3.
तुझे केवल मैं जानता हूँ ।

(सारनाथ की एक शाम : त्रिलोचन के लिए)
–शमशेर बहादुर सिंह

ग़ालिब

ग़ालिब ग़ैर नहीं हैं, अपनों से अपने हैं,
ग़ालिब की बोली ही आज हमारी बोली
है । नवीन आँखों में जो नवीन सपने हैं
वे ग़ालिब के सपने हैं । ग़ालिब ने खोली
गाँठ जटिल जीवन की, बात और वह बोली
नपीतुली थी, हलकेपन का नाम नहीं था ।
सुख की आँखों ने दुख देखा और ठिठोली
की, यों जी बहलाया । बेशक दाम नहीं था
उन की अंटी में, दुनिया से काम नहीं था
लेकिन उस को साँस-साँस पर तोल रहे थे ।
अपना कहने को क्या था, धन-धान नहीं था,
सत्य बोलता था जब जब मुँह खोल रहे थे ।

ग़ालिब हो कर रहे जीत कर दुनिया छोड़ी,
कवि थे, अक्षर में अक्षर की महिमा जोड़ी ।

अभ्यास

सॉनेट के साथ

1. 'ग़ालिब ग़ैर नहीं हैं, अपनों से अपने हैं' के द्वारा कवि ने क्या कहना चाहा है ?
2. 'नवीन आँखों में जो नवीन सपने हैं' से कवि का क्या आशय है ?
3. 'सुख की आँखों ने दुःख देखा और ठिठोली
   की' में किन दुखों की ओर संकेत हैं ?
4. ग़ालिब ने अक्षर में अक्षर की महिमा किस तरह जोड़ी ?
5. निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -

   "अपना कहने को क्या था, धन-धान नहीं था,
   सत्य बोलता था, जब-जब मुँह खोल रहे थे ।"
6. इस रचना के आधार पर ग़ालिब के व्यक्तित्व की कौन-कौन-सी विशेषताएँ उभर कर सामने आती हैं ?
7. 'ग़ालिब होकर रहे' से कवि का क्या आशय है ?

सॉनेट के आस-पास

1. प्रस्तुत रचना एक सॉनेट है । सॉनेट के विषय में जानकारी प्राप्त करें ।
2. ग़ालिब उर्दू के महान शायर हैं । उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विषय में अपने शिक्षक से चर्चा करें ।
3. ग़ालिब की गजलों को कई गायकों ने गाया है । उन कैसेटों को सुनें और अपनी पसंद से उनके दस शेर चुनें । अपने मित्रों से उनकी शायरी पर चर्चा करें ।
4. शेर और गजल किसे कहते हैं ?
5. इस कविता में ग़ालिब के जीवन से जुड़े हुए तथ्यों का सांकेतिक कथन है । उर्दू शिक्षक से ग़ालिब के जीवन से जुड़े तथ्यों का संग्रह करें https://www.evidyarthi.in/
6. त्रिलोचन ने तुलसीदास पर भी एक सॉनेट लिखा है, जो नीचे दिया जा रहा है -

   तुलसी बाबा, भाषा मैंने तुम से सीखी,
   मेरी सजग चेतना में तुम रमे हुए हो,
   कह सकते थे तुम सब कड़वी-मीठी, तीखी ।
   प्रखर काल की धारा पर तुम जमे हुए हो,
   और वृक्ष गिर गए, मगर तुम थमे हुए हो ।
   कभी राम से अपना कुछ भी नहीं दुराया,
   देखा, तुम उनके चरणों पर नमे हुए हो ।

विश्व बदर था हाथ तुम्हारे, उक्त फुराया,
तेज तुम्हारा था कि अमंगल-वृक्ष झुराया,
मंगल का तरु उगा, देख कर उसकी छाया
विघ्न-विपद के घन सरके, मुँह नहीं चुराया ।
आठों पहर राम [redacted], राम-पु[redacted] ।

यज्ञ रहा, तप रहा तुम्हारा जीवन भू पर ।
भक्त हुए, उठ गए राम से भी, यों ऊपर ।

इसी तरह उन्होंने कबीर पर भी सॉनेट लिखा है और कुछ सॉनेट स्वयं त्रिलोचन पर भी । आप इन सॉनेटों का संग्रह करें और उनका पाठ करें ।

7. त्रिलोचन नागार्जुन की तरह ही एक घुमंतू कवि माने जाते हैं । एक जगह उनके पाँव नहीं जमते । उनके व्यक्तित्व की अन्य विशेषताओं के बारे में जानकारी इकट्ठी कीजिए ।

भाषा की बात

1. प्रस्तुत सॉनेट में त्रिलोचन ने कई मुहावरों का प्रयोग किया है । जैसे - अपनों से अपना, अंटी में दाम न होना आदि । पाठ के आधार पर ऐसे मुहावरों की सूची बनाएँ और उनका वाक्य में प्रयोग करें ।
2. महिमा, गरिमा शब्दों की तरह 'इमा' प्रत्यय लगाकर आठ अन्य शब्द बनाएँ ।
3. 'धन-धान' में कौन-सा समास है ?
4. 'सत्य बोलता था जब-जब मुँह खोल रहे थे' - इस वाक्य में कर्ता कौन है ।
5. 'बेशक' में 'बे' उपसर्ग है । 'बे' उपसर्ग लगाकर सात शब्द बनाएँ ।
6. 'अक्षर' शब्द के प्रयोग में श्लेष अलंकार है, कैसे ? स्पष्ट कीजिए ।
7. त्रिलोचन की काव्य भाषा में एक सादगी और सरलता दिखलाई पड़ती है जो चौड़ी-गहरी नदी जैसी बताई जाती है । इस सॉनेट की सादगी और सरलता को आधार बनाकर उनकी काव्य भाषा पर एक टिप्पणी कीजिए ।
8. 'महिमा' संज्ञा है या विशेषण ? वाक्य में प्रयोग कर स्पष्ट करें ।

शब्द निधि

ग़ालिब	:	शक्तिशाली, जबर्दस्त, विजेता
ग़ैर	:	पराया
ठिठोली	:	मजाक, दिल्लगी
अंटी	:	बटुवा, जेब
अक्षर	:	जिसका क्षरण न हो, जो नष्ट न हो
बेशक	:	निस्संदेह